Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
ISSN : 2395-7069 (Print), General Impact Factor : 2.0546, Volume 03, No. 04, Oct.-Dec., 2017, pp. 400-404

jktLFkku dh xzkeh.k fodkl esa vk/kkjHkwr lajpuk dh Hkwfedk dk v/;;u

cfq) izdk'k cSjok*
egs'k dqekor**

सार

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान के ग्रामीण विकास में आधारभूत संरचना की भूमिका की वास्तविकता को जानने का एक प्रयास ही नहीं वरन आधारभूत संरचना को ग्रामीण विकास का आधार स्तम्भ के रूप में प्रमाणित करना है।

प्रस्तावना

हमारे देश के विकास का सार्वभौमिक स्वस्प पूर्णत : ग्रामीण विकास पर ही निर्भर करता है, क्योंकि देश की जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत भाग गांवो में ही रहता है। प्रस्तुत अध्ययन में विकास के गन्तव्य में ग्रामीण जीवन की सहज भूमिकाओं, समस्याओं व सुझावों को प्रतिपादित करने का आयाम है।

उत्कृष्ट आधारभूत संरचना जिसमें रेल्वे, सड़क, पतन, नागर विमानन विद्युत पारेषण, ओर वितरण ; संचार (दूरसंचार और डाक) ; जलापूर्ति ,शौचालय, स्वच्छता तथा ठोस अपशिष्ट पदार्थ प्रबन्धन शामिल है, विशेषकर पिछडे राज्यों में तीव्र और निरन्तर विकास हासिल करने और गरीबी दूर करने की दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ है।

vk/kkjHkwr lajpuk dks i;kZ; vkfFkZd ,oa lkekftd mifjO;; Hkh dgrs gS buesa lfEefyr gS%

õ ऊर्जा : कोयला, बिजली, तेल और अपारम्परिक स्त्रोत ।

õ परिवहन : रेल्वे, सड़के, जहाजरानी और नागरिक परिवहन ।

õ संचार : डाक एवं तार, टेलीफोन, टेली संचार आदि ।

õ बैकिग, वित्त एवं बीमा ।

õ विज्ञान एवं तकनीकी : और

õ सामाजिक उपरिव्यय : स्वास्थ्य, शौचालय, सफाई, पेयजल, शिक्षा आदि।

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत आधारभूत संरचना के दो क्षेत्रो–ऊर्जा व परिवहन क्षेत्र का विशेष रूप से अध्ययन किया गया है।

v/;;u dk mn~ns';

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राजस्थान के ग्रामीण विकास में आधरभूत संरचना की भूमिका का विश्लेषण करना है।

---

* शोधछात्र, आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंध विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधछात्र, आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंध विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

इस अध्ययन को दिशा प्रदान करने के लिए निम्नलिखित उद्देश्य तय किये गये हैः

õ राजस्थान में ग्रामीण विकास में आधारभूत संरचना की भूमिका के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन करना।

õ वर्तमान में ग्रामीण विकास में आधारभूत संरचना के विकास कार्यक्रमों का विश्लेषण करना एंव इनकों श्रेष्ठ बनाने हेतु नवीन उपायों की खोज करना ।

õ ग्रामीण विकास एंव आधारभूर संरचना के विकास हेतु केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा उठाये गये कदमों की जाँच करना एवं उनकी पर्याप्तता का विश्लेषण करना ।

õ राजस्थान में आधारभूत संरचना से संबन्धित ग्रामीण समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

lkfgR; dk iqujkoykdu

nhikjke] u viu 'kk/k i=cU/k] **jktLFkku e iapk;rjkt lLFkk,¡ ,o xkeh.k jktxkj dk;Øe ,d vkykpukRed eY;kdu^^ ¼2007½ मैं लिखा है कि राजस्थान के ग्रामीण विकास में पंचायती राज संस्थाओं का महत्वपूण स्थान रहा है। ये संस्थाऐ राजस्थान राज्य के चहुँमुखी विकास के लिए कृत संकल्प है। एक और ग्रामीण क्षेत्रों में आधार भूत संरचना के सजृन में यह संस्थाए बहुमुल्य भूमिका निभा रही है। तो दूसरी और रोजेगार सृजन कार्यक्रमों का सफल क्रियान्वयन करके बैरोजगारो लोगो को रोजगार के अवसर उपलब्ध करवा रही है।

lR;Hkku ;kno fd iLrd **xkeh.k fodkl dk vk/kfud n'ku^^¼2001½ की पुस्तक में लेखा है भारतीय नियोजन में आधारभूत संरचना के निर्माण एंव क्रियान्वयन पर सरकार बड़ी मात्रा में धनराशि खर्च करती रही है। शिक्षा चिकित्सा, आवास, परिवहन, ऊर्जा जैसे मानव विकास सूंचकाकों को सुनिश्चित क्रिया जाने लगा है।

ie ukjk;.k ik.M; u viuh iLrd **xkeh.k fodkl ,o ljpukRed ifjorlu^^ ¼2000½ मैं लिखा है कि विकासशील देशो में भारत की भौतिक एवं आर्थिक क्षमताएं नि : सन्देह इसे अग्रणी बनाती है किन्तु विडम्बना यह है कि स्वतंत्रता के बाद बहुत से कार्यक्रम, नीतियाँ, योजनाएं एवं परियोजनाए संचालित हुई है और उनके परिणाम राष्ट्रीय प्रत्याशाओ के अनुरूप नहीं रहे है। इसका मुख्य कारण विकास अभिकरणों तथा उनको संचालित करने वाले प्राधिकृत अधिकारी तंत्र की लालफीताशाही, उदासीनता अर्थलिप्सा, रिश्वतखोरी तथा संकल्पित उन्मेष का अभाव हो सकता है।

lcg flg ;kno dh iLrd **Hkkjr e fu;kstu ,o fodkl^^¼1991½ मै लिखा है भारतीय अर्थव्यवस्था के पुनः सृजन हेतु समय–समय पर विभिन्न ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को संचालित किया गया। परिणामतः ग्रामीण क्षेत्रो में सामाजिक व आर्थिक विकास हेतु एक भौतिक एंव संस्थागत आधारभूत संरचना की नींव रखी गई।

ifjdYiuk;s

õ राजस्थान सरकार ग्रामीण विकास एंव आधारभूत संरचना के विकास करने के प्रति सचेष्ट है।

õ ग्रामीण विकास एंव आधारभूत संरचनाओं में धनात्मक सम्बन्ध है।

õ राजस्थान में आर्थिक नितियों के प्रभावपूर्ण क्रियान्वयन से ग्रामीण आधारभूत संरचना के विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

v/;;u dk {ks=

वर्तमान अध्ययन के लिए अनेक अनियंत्रित कारणों की वजह से अध्ययन का क्षेत्र भारत के राजस्थान राज्य को रखा गया है। जिसमें विशेष रूप से राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा व परिवहन संबधी आधारभूत संरचनाओं का अध्ययन किया जायेगा।

इसके अन्तर्गत ग्रामीण विकास में आधारभूत संरचना के विकास के क्या–क्या कार्यक्रम चलाये जा रहे है तथा क्या–क्या चलाये जाने चाहिए, आदि कारको का अध्ययन किया गया है। जो ग्रामीण विकास में आधारभूत सरंचना की भूमिका को प्रभावित करते है।

’kk/k i:fof/k

शोध का तात्पर्य एक ऐसे सत्य की लगातार खोज करते रहना है जो कि पूर्णरूपेण ज्ञात नहीं हो सका तथा जिसकी जिज्ञासा बनी हुई है।

वस्तुत ज्ञान की खोज का निश्चित सम्बन्ध लोगो की प्राथमिक आवश्यकता ओं एवं कल्याण से होता है वैज्ञानिक मान्यता यह होती है की समस्त ज्ञान मूलभूत रूप से इस अर्थ में उपयोग होता है कि वह इस सिद्वान्त के निर्माण में या एक कला को व्यवहार में लाने में सहायक होता है, सिद्वान्त ओर व्यवहार आगे जाकर एक दूसरे में मिल जाते है। इस प्रकार व्यावहारिक अनुसंधान की संज्ञा उसे दी जाती है जिसमें ज्ञान प्राप्ति मानवीय ज्ञान की वृद्वि में सहायता प्रधान कर सके।

शोध का विषय ''राजस्थान के ग्रामीण विकास में आधारभूत संरचना की भूमिका का अध्ययन (ऊर्जा व परिवहन क्षेत्र)'' है। जिसके संदर्भ में व्यवहारिक शोध विधि का प्रयोग करना उपयुक्त समझा गया है।

õ ikFkfed L=kr%& प्राथमिक स्त्रोत का आशय अध्ययन क्षेत्र से होता है। शोधकर्त्ता को स्वयं अपने क्षेत्र में कार्य करना पडता है। और अवलोकन पद्वति, प्रश्नावली, प्रश्न, अनुसूची व साक्षात्कार आदि के माध्यम से अध्ययन विषय से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित किया गया है।

õ f}rh; L=kr%& द्वितीय स्त्रोत का आशय ऐसे समंको से हाता है जिनका प्रयोग पहले हो चुका है और शोधकर्त्ता द्वारा शोध हेतु पुन प्रयोग में लाया जाए। जिनमें प्रकाशित व अप्रकाशित सरकारी व गैर सरकारी प्रलेख व दस्तावेजों से होता है। जिनमें से शोधकर्त्ता अध्ययन विषय के लिए वांछित सूचनाएं व तथ्यो का एकत्रीकरण किया गया है इनमे ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज विभाग, सांख्यिकी विभाग, राजस्थान सरकार, गैर सरकारी संगठनों के द्वारा प्रकाशित लेख वार्षिक प्रतिवेदन, आर्थिक समीक्षा प्रतिवेदन आदि का प्रयोग किया गया है। सूचनाओं एवं संमको के विश्लेषण में प्रतिशत औसत आदि सामान्य गणितीय पद्वतियों का अनुसरण किया गया है। इनमें प्रकाशित बुलेटिन, पुस्तके पत्र पत्रिकाऐ एवं प्रकाशित आलेख आदि का भी समुचित उपयोग किया गया है।

v/;;u dh lhek

कोई भी शोध अध्ययन अपने आप में पूर्ण नहीं होता है। अथक प्रयासों के बाद भी कुछ सीमाएं अध्ययन की हो सकती है। प्राथमिक आँकड़े व सूचना की सत्यता इस बात पर निर्भर करती है कि सूचना देने वाला स्त्रोत कितनी सही सूचना व जानकारी दे रहा है।

द्वितीय यह कि आँकड़ो की सत्यता भी व्यक्ति की योग्यता निष्पादता व कुशलता पर भी निर्भर करती है।

vk/kkjHkwr lajpuk dk ik;% vkfFkZd ,oa lkekftd mifj0;; Hkh dgrs gS blesa fuEu lfEefyr gS%

õ Åtk dk {ks= esa: राजस्थान के ग्रामीण विकास में आाधारभूत स्तर में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र ऊर्जा है जिसमे कोयला, बिजली, तेल और अपारम्पारिक स्त्रोत को प्रमुख रूप से सम्मिलित किया गया है देखा जाये तो राजस्थान की विभिन्न सरकारो द्वारा समय समय पर विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों द्वारा आशानूरूप कार्य किया गया है फिर भी सरकारी तंत्र पर उदासीनता के कारण आशातीत सफलता प्राप्त नहीं हो पायी है जिसके परिणाम स्वरूप राज्य में औधोगिक विकास उचित रूप से नही हो पाया है ।

õ Ikfjogu dk {ks= esa: आधारभूत स्तर का दूसरा वृहद क्षेत्र परिवहन क्षेत्र को जाना जाता है जिसमे मुख्यत: सडके, रेल्वें, जहाजरानी और नागरिक परिवहन शामिल किया गया है राज्य के भोगौलिक क्षेत्र के विस्तृत होने के कारण सरकारो द्वारा अपने बजट का अधिकांश भाग व्यय करने के बावजूद भी आशातीत सफलता प्राप्त नहीं हो पायी है जिससे कि अधिकाशं ग्रामीण क्षेत्रो में बारहमासी सडको की सुविधा नहीं है और अधिकांश क्षेत्र रेल व नागरिक परिवहन से वंचित है जिसका मुख्य कारण राज्य के अधिकांश क्षेत्रफल में रेगिस्तान का होना है।

õ **Lkpkj d {k= e:** ग्रामीण विकास में आधारभूत सुविधाओ में संचार का योगदान भी महत्वपूर्ण है जिसमें डाक सेवा, तार सेवा, टेलीफोन सेवा एवं टेली संचार को शामिल किया गया है राज्य में परिवहन व ऊर्जा क्षेत्र का पर्याप्त विकास नही होने के कारण संचार क्षेत्र के विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है तथा सरकारी तंत्र की उदासीनता भी संचार की अन्य सुविधाओ के विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

õ **cfdx, foRr ,o chek {k= e:** राजस्थान राज्य में स्वतंत्रता के पश्चात बैकिंग, वित्त एवं बीमा क्षेत्र का व्यापक स्तर पर विकास हुआ है परन्तु जागरूकता के अभाव में अधिकांश ग्रामीण लोग बैकिंग सेवाओ के लाभ से वंचित है। वर्तमान समय में राजस्थान राज्य में सरकारी व गैरसरकारी बैकिंग व बीमा क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओ का विवरण निम्न प्रकार है।

fooj.k	jkT; e dk;jr cfdx lLFkk,	jkT; e dk;jr chek lLFkk,
सरकारी	21	4
गैरसरकारी	35	38

õ **lkekftd mifj0;;:** राज्य में ग्रामीण विकास व पंचायतीराज विभाग द्वारा सामाजिक उपरिव्यय का कार्य देखा जाता है सामाजिक उपरिव्यय में स्वास्थ्य, शौचालय, सफाई, पेयजल, शिक्षा आदि क्षेत्र को प्रमुख रूप सें शामिल किया गया है। विभिन्न सरकारो द्वारा उपरोक्त क्षेत्र मे विभिन्न योजनाओ व कार्यक्रमो द्वारा क्रियान्वित किया गया है जिससे अधिकाशं ग्रामीण क्षेत्रो में इन सुविधाओ का लाभ आम जनता द्वारा उठाया जा रहा है फिर भी अभी भी इस क्षेत्र में अनेक कार्य किये जाने है ।

fu"d"k: उपरोंक्त अध्ययन करने के पश्चात हम इस नतीजे पर पहुॅचे है कि राजस्थान राज्य में आघारभूत सुविघाओं का जितना विकास होना चाहिए था उतना नही हो पाया है जिससे राज्य की जनता के जीवन स्तर में जितनी वृद्वि होनी चाहिए थी उतनी नहीं हों पायी है। सामाजिक एवं आर्थिक विषमताऐं राज्य की प्रगति में प्रमुख बाघा रही है सरकार द्वारा क्रियान्वित विभिन्न आधारभूत स्तर की योजनाओ का क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर पर्याप्त रूप से नहीं हो पा रहा है जिसका मुख्य कारण समय समय पर सरकारों का परिवर्तन होना व ओधौगिक नीति में परिवर्तन भी मुख्य रहा है।

हालाकिं स्वतंत्रता के पश्चात राज्य के आधारभूत सुविधाओं में व्यापक स्तर पर वृद्वि हुई हैं परन्तुं फिर भी आधारभूत सुविधाओं में जितना विकास होंना चाहिए था उतना नहीं हों पाया है जिसका मुख्य कारण राज्य का विस्तृत क्षेत्रफल, सामाजिक आर्थिक विषमता का होना, लचर पंचवर्षीय योजना का क्रियान्वयन, प्रशासनिक स्तर पर लालफीताशाही व भ्रष्टाचार का विधमान होंना अधिकांश समय प्राकृतिक आपदाओं का होना व अधिकाश क्षेत्र में रेगिस्तान का होंना प्रमुख कारण है जिसे सरकारी प्रयासों व जन जाकरूकता द्वारा कम किया जा सकता है।

lUnHk xUFk lph

iLrd

- कोठारी, सी.आर, ग्रग, गोरव, ''रिसर्च मैथड़ोलोजी –मैथड्स एण्ड टेकनिक्स, न्यू एग पब्लिसर्स नई दिल्ली, 2014.
- शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश ,''रिसर्च मैथड़ोलोजी पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2014.
- मल, प्रताप, '' इफ्रास्ट्रक्चर डेबलपमेन्ट फार एग्रीकलचर एण्ड रूलर डेबलपमेन्ट'', मोहित पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011
- राम, दीपा, ''राजस्थान में पंचायती राज संस्थाए एवं ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम – एक आलोचनात्मक मूल्यांकन ''अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 2007
- कुमार. सुशील, ''ग्रामीण विकास एंव क्षेत्रीय नियोजन'' अर्जुन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2004.

- पाण्डेय, प्रेम नारायण, ''ग्रामीण विकास एवं संरचनात्मक परिवर्तन'', रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2000.
- चौधरी. सी.एम., ''ग्रामीण विकासः एक अध्ययन'', शुभम पब्लिकेशन, जयपुर, 1991.

i;fronu

- राजस्थान सरकार (आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय) सम पेक्स अबाउट राजस्थान
- ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज विभाग राजस्थान (जयपुर) वार्षिक प्रतिवेदन
- भारत सरकार (वित विभाग), नई दिल्ली, वार्षिक इकॉनामिक सर्वे
- राजस्थान सरकार (आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय) सांख्यिकी रूप रेखा जयपुर 2011.

if=dk,@lkef;dh

- कुरूक्षेत्र, नई दिल्ली
- राजस्थान विकास, जयपुर

nSfud lekpkj i=

- टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली
- दी इकोनॉमिक्स टाइम्स, नई दिल्ली
- दैनिक भास्कर, जयपुर
- राजस्थान पत्रिका, जयपुर

osclkbV **(Websites)**

- http://www.panchayatraj.gov.in
- http://www.statistics.rajasthan.gov.in
- http://www.dpiraj.gov.in

❍❍❍